स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर प्रधानमंत्री नेहरू द्वारा
लाल किले से राष्ट्र के नाम संदेश "

दिनांक:-15-8-50

बहिनो और भाइयों,

जयहिन्द ! आज आजाद हिन्द की तीसरी सालगिरह है । यह वर्ष गांठ आपको मुबारक हो । इन तीन बरसों में कई मंजिलें पार हमने की । बहुत बार ठोकर खाई और गिरे और फिर अपने को उठा कर आगे बढ़े । तो फिर जो जो बातें इन सालों में हुई अच्छी या बुरी, उन सब बातों के लिए आपको मुबारक बाद मैं देता हूं । क्यों मैंने यह कहा ? बुरी बातें भी क्यों शामिल की ? शायद गलत था वो कहना, लेकिन मेरे माने यह थे कि जो आपको इन बरसों में खुशी हुई वह मुबारक हो, और जो आपने आंसू बहाये और तकलीफ उठाई, वह भी मुबारक हो, क्योंकि कौमें बढ़ती हैं खुश होकर और आंसू बहाकर--- और दोनों तरह से । जब कोई कौम एकजोर हो जाती है, जब किसी कौम की आजमाईश नहीं होती हर वक्त, तो वह ढीली हो जाती है, और इन तीन बरसों में काफी हमारी आजमाईश हुई । इन तीन बरसों के पहले भी एक जमाने से इस मुल्क की और इस देश के रहने वालों की बहुत काफी आजमाइशें हुई थी, इम्तहान हुए थे, और अगर हमने आजादी हासिल की तो कुछ उन इम्तहानों में कामयाब होने का नतीजा था वो । अब हमारे और आपके, और सारे मुल्क के सामने , और सख्त इम्तहान और आजमाईशें आई हैं और जिस दर्जे हम उनका सामना कर सकते हैं, हिम्मत से, उस दर्जे हम कुछ कामयाब होते हैं । इसलिए खुशी भी आप को

मुबारक, और तकलीफ भी आप को मुबारक हंसना भी आपको मुबारक, और रोना भी आपको मुबारक। लेकिन एक चीज मुबारक आपको नहीं और वो बुजदिली वो तंगख्याली वह मैं झगड़ा करना यह बात मुबारक नहीं, क्योंकि वह कमजोर करती है, आप को और गिराती है मुल्क को, और जो, जिस ताकत की एक आजाद मुल्क को जरूरत है वह कम करती है। इस तीन बरस में कई मंजिलें हुईं। अभी पिछली 26 जनवरी को एक बड़ी मंजिल हमने पूरी की। और जिस चीज का ख्वाब हमने बरसों से देखा था उसको पूरा होते देखा--- बहुत हमारे स्वप्न हमने देखें पूरे होते, बहुत अभी तक ख्वाब रहे गये हैं। 26 जनवरी आई और चन्द महीने में इस मुल्क में, लाखों करोड़ों आदमी अपनी राय देंगे चुनाव में, और एक नई हुकूमत के अफसर चुनेंगे और यह काम जो हमने, अपना हमने क्या सिद्धांत नया कंस्टीट्यूशन शुरू किया है वह पूरा होगा। इसतरह से एक एक कदम हम आगे बढ़ते जाते हैं, आसानी से नहीं, मुश्किल से, मुसीबत से, तकलीफ से, परेशानी से, लेकिन एक एक कदम आगे बढते जाते हैं। जरा दुनियां के तरफ, देखिए, चारों तरफ क्या हाल है। और मुल्कों की क्या दशा है आजकल, किस किस मुसीबत में पड़े हैं। क्या फिर से लड़ाई के बड़ी लडाइयों के चर्चे हैं, फिर जरा अपने मुल्क की तरफध्यान कीजिए। काफी हममें कमजोरियां और खराबियां, लेकिन फिर भी हम हलके हलके आगे ही बढ़ते हैं, पीछे नहीं हटते। इस दुनियां के नक्शे में, हमें अपने मुल्क को समझना है और खासतौर से इस बात को याद करना है कि ऐसे मौके पर जब सारी दुनियां में जलजले आएं, भूकम्प आएं, खतरे आएं तो हमारा क्या कर्तव्य है और क्या फर्ज है। कौन मुसीबत के वक्त आपके मुल्क को और हमको कौन दूर से और देशों से आकर

मदद करेंगे ? और जो कौमें दूर देखती हैं मदद के लिए, वह कमजोर हो जाती है । (हमने अपनी आजादी की लड़ाई लड़ी, किसी और के भरोसे पे नहीं, किसी हथियार के भरोसे पे भी नहीं । अपने दिल के और दिमाग के और, और हिम्मत के भरोसे से लड़ी थी और हम कामयाब हुए ) तो अब जो और खतरे तो हम अपनी ताकत से बच सकते हैं, किसी और की ताकत से नहीं, हम किसी और से दुश्मनी नहीं करना चाहते, दोस्ती करना चाहते हैं, और सब मुल्कों से, लेकिन आखिर में हम अपनी ताकत पे रहना है । एक आजाद मुल्क में यह जरूरी बात है कि ख्यालात की आजादी हो, विचारों की, जो लोग चाहें अपने ख्यालों का इजहार कर सकें, जो लोग चाहें जिस रास्ते पर चलना, चाहे राजनैतिक उस पर चलें, चाहे दल बनायें, पार्टी बनाये, सब कुछ करें, ठीक है, क्योंकि अगर वह आजादी न हो तो आजाद मुल्क नहीं रहता वह एक गुलाम हो जाता है, दबा हुआ हो जाता है, यह बात सही है, लेकिन उसी के साथ जो लोग उस मुल्क की आजादी के खिलाफ काम करें, या जो लोग कोई ऐसा काम करें, जिससे वह आजादी हिले और कमजोर हो, वह लोग कौन हैं और कैसे हैं और किस नाम से वो पुकार जाएं ? इसलिए मैं आपको याद दिलाता हूं कि---दो बातों को अलग करना है । एक ख्यालात की आजादी, एक अमल की आजादी, लेकिन हमेशा इस बात को देखकर , कि मुल्क की आजादी, को और मुल्क की एकता को और मुल्क की मजबूती को वह बात कमजोर तो नहीं करता ।"क्योंकि अगर वह कमजोर करती है तो वह बात मुल्क के साथ गद्दारी हो जाती है । इन दोनों बातों में लोग अक्सर फरक नहीं समझते । आजादी में माने यह नहीं हैं कि हर एक आदमी हर बुरा फेल करें, आजादी के साथ

से । आजादी, आप अपने ख्यालातों का इजहार कीजिए आजादी से उसके माने नहीं कि सड़क चलते या अखबारों में हर एक को गालियां दीजिए । क्योंकि फिर यह तो सारी हमारी जिन्दगी गिर जाएगी । ऐसी बातों से । खास तौर से आजादी के माने नहीं है कि लोग उस आजादी के नाम से उसी आजादी की जड़ खोदें । अगर कोई ऐसा करें तो जाहिर है कि उसका मुकाबला करना होता है , उसको रोकना होता है और ऐसे लोग मुल्क में हैं, जो आजादी के नाम से , काफी झगड़ा फिसाद करते हैं, काफी उपद्रव किया है, काफी उन्होंने मुल्क को कमजोर करने की कोशिश की है। उनका मुकाबला हुआ और चूंकि मुल्क का दिलल मजबूत है, बावजूद कमजोरियों के , इसलिए हम कामयाब हुए और मुल्क आगे बढ़ता जाता है । आज लोग हैं जिन्होंने एलान किया आज के दिन कि आज के दिन में कोई हिस्सा न लें आज के दिन के मनाने में पन्द्रह अगस्त के मनाने में कोई हिस्सा न लें । एक और कदम बढ़े वो लोग, कहा कि इसमें रुकावटें डालनी चाहिए । गौर करें आप, कि किसे दिमाग से यह ख्याल निकलता है, किसे दिल से यह जजबा पैदा होता है, किस किस्म का हैं, यह कोई एक ख्यालात की आजादी का सवाल है, या कोई यह है कि कोई पार्टी कोई राय रखें कोई और । यह बस ऐ ऐसी है कि जड़ और बुनियाद से हिन्दुस्तान की आजादी पर हमला है । और जो लोग ऐसा करते हैं चाहे वह कोई हों और किसी दिल में हों, हमारा फर्ज हो जाता है कि हम उसका मुकाबला करें, और पूरी तौर से करें, और उनको झाड़ू से हटा दें । इसके माने क्या हैं ? एक मुल्क में इस तरह से लोग हैं जो हर वक्त आवाज उठाते हैं फूट की आपस में लड़ाई और झगड़े की, गौर हर वक्त यह कहते हैं कि जो आजादी

मिली काफी नहीं है, काफी नहीं है इस लिए उसको भी तोड़ना चाहते हैं । अजीब हालत है या तो उनके दिमाग में कमी या उनके दिल में कमी है या कोई और कोई फितुर उनमें है । यह बात हमें समझना है । इसके माने क्या हैं कि हम ऐसे नाजुक वक्त पर दुनियां के जब दुनियां हिल रही है ज ब दुनियां में मालूम नहीं क्या मुसीबतें आएं । जब आपका मेरा और हर एक हिन्दुस्तानी का फर्ज है जो भी हममें एक दूसरे में फर्क हो, फर्क है, फर्क रखें, अगर जी चाहे मुझ से आप लड़ें, मैं आपसे लड़ूं लेकिन जब हिन्दुस्तान का मामला उठता है तो आप हिन्दुस्तानी और मैं हिन्दुस्तानी और हर एक शख्स हिन्दुस्तान का हिन्दुस्तानी है, और अगर नहीं मानता इस बात को तो हिन्दुस्तानी नहीं है., वह किसी और मुल्क में जा कर रहे वो बो फिर इस बात, जिस जड़ और बुनियाद पर हम खड़े हुए पिछले जमाने में इत्तिहाद की एकता की जो इस देश में अलग अलग कौमें हैं, अलग अलग मजहब हैं अलग अलग सूबे और प्रान्त के रहने वाले हैं, उनकी एकता पर फिर मैं देखता हूं आवाजें उठती हैं, बाज लोगों की, बाज दलों की आपस में लड़ाई पैदा करने की, झगड़े पैदा करने की, मजहबी झगड़े मजहबी तो होते नहीं, धार्मिक तो होते नहीं, वह तो धर्म के नाम लेकर, सियासी होते हैं, राजनैतिक होते हैं, फूट पैदा करना, झगड़ा पैदा करना, और हर एक एक प्रान्त में प्रान्तीयता बढ़ना, सोचिए आप विचार कीजिए कि इससे मुल्क तगड़ा होता है, मजबूत होता है कि कमजोर होता है इसलिए हम हमारे और आप में और हिन्दुस्तान के रहने वालों में कितने ही आपस में, मुबारक हो हममें और आप में राय का फरक होना अलग अलग रायें हो अलग अलग रायों का इजहार हो, मैं चाहता हूं, यह मैं नहीं चाहता कि हिन्दुस्तान के लोग आंखें बंद

कर के कान बंद कर के एक आवाज उठायें एक ही बात कहें। गोया कि उनको कोई दिमाग नहीं, दिल नहीं। हमें हक है अपनी अपनी आवाजें उठाने का----लेकिन किसी हिन्दुस्तानी को हक नहीं है कि वह हिन्दुस्तान के आजादी के खिलाफ आवाज उठाएं। किसी हिन्दुस्तान को हक नहीं है कि ऐसी बुनियादी बातों के खिलाफ आवाज उठाएं जो हिन्दुस्तान की एकता को, हिन्दुस्तान के इतिहास को कमजोर करें। क्योंकि अगर वो करता है, तो फिर वह चाहे या न चाहे, चाहे वह समझे या न समझे वह हिन्दुस्तान के और हिन्दुस्तान की आजादी के खिलाफ गद्दारी करता है। इसलिए इन बुनियादी बातों को हमें समझना है, क्योंकि जमाना नाजुक है और हम इस दुनियां के आगे तरक्की नहीं कर सकते अगर हम अपने मुल्क में मजबूती से कायम नहीं है। काफी हमारे सामने दिक्कतें हैं आप जानते हैं। दुनियां में अजीब हाल है आज कल आप जानते हैं कि इस एशिया के एक कोने में लड़ाई हो रही है। हालांकि छोटे मुल्क में लड़ाई है फिर भी भयानक लड़ाई है। मालूम नहीं कब तक चले, वो मालूम नहीं वह बढ़े या वहीं रहे, हमारी कोशिश है कि हम वो बढ़े नहीं, दुनियां भर में आग न लगे, हमारी कोशिश है कि जल्दी से जल्दी वो रुक जाए, लेकिन आखिर हमारी कोशिश तो दुनियां पे हावी नहीं आ सकती। मालूम नहीं क्या हो? लेकिन एक बात तो हम कर सकते हैं, अगर हमारी हिम्मत है कि अपने मुल्क को सम्भालें, अपने मुल्क की ताकत बंधी रखें कि हम अच्छे रास्तों पर उसको ले जा सकें और अगर दुनियां में आग भी लगे तो अपने मुल्क को बचाएं और मुमकिन होतो हम दुनियां के बचाने में भी मदद करें। लेकिन अगर हममें इत्तिहाद है।

तो फिर यह तो बड़ी--- मुल्क की तरफ आप देखें काफी बड़े सवाल हैं, अव्वल सवाल खाने का सवाल हर एक इंसान के लिए होता है और पिछले दो तीन बरस से इस बारे में काफी हमने कोशिश की , काफी बातें की, कभी कभी लम्बी चौड़ी भी बातें की । क्या हाल है इस वक्त ? आजकल आप सुनते हैं कि आज हमारे प्रान्त में मद्रास के, बिहार के, काफी परेशानी है, अजीब अजीब खबरे आती हैं, जिनको पढ़कर दिल दहलता है । तो बात तो यह है , कि फिक्र की बात काफी है ।

लेकिन जिस दर्जे वह बात बढ़ाई गई है, वह भी एक गैर-जरूरी है और उससे और दहशत होती है । तो यह खाने का मामला हमारा अव्वल मामला है । क्यों है, यह क्या बात हुई है । मुख्तलिफ वजूहात से मुल्क में खाना काफी सब लोगों के लिए पैदा नहीं होता, कई बातें उसमें हैं, पिछली लड़ाई हुई, पाकिस्तान हुआ, खाना के पैदा करने के हिस्से चले गये, मुल्क से, आबादी बढ़ी बहुत सारी बातें हैं । अब कोई मुल्क और खासकर हमारा ऐसा मुल्क हिन्दुस्तान , अगर वह काफी अपना खाना पैदा न करे, तब फिर वो एक औरों के मातहत हो जाता है , क्योंकि उसे और तरफ देखना पड़ता है । अलावा इसके कि हमें बहुत पैसा खर्चना पड़ता है और जगह से खाना लाने में, लेकिन हम उससे भी ज्यादा यह बात होती है कि हम कमजोर हो जाते हैं, और, और लोग हमें दबा सकते हैं, हमारी आजादी में खलल पड़ जाता है और अगर कल बदकिस्मती से, दुर्भाग्य से एक बड़ी लड़ाई दुनियां में हो, तब तो कहीं और से हमारे मुल्क में खाना नहीं आएगा । या बहुत कम आयेगा तब हम कैसे काम चलाएंगे ? जाहिर है हमें अपने घर में अपना इंतजाम पूरा करना है । हमें अपना खाना पैदा करना है, और अगर एक किस्म का खाना हमें नहीं, मिलता तो हमें

नहीं मिलता, तो हमें तो दूसरे तरह का खाना खाना है । यह वक्त ऐसा नहीं है, कि आप मुझ से कहें या मैं आपसे कहूं कि मैं तो आदी हूं एक चीज खाने का , दूसरा नहीं खाता । जो चीज मिलेगी हमें खानी पड़ेगी, अगर दुनिया से नहीं आ सकती और रास्ते बंद है । इसलिए हमें अपने को आदी करना है, इसलिए हमें अपने घर में काफी पैदा करना है । इसलिए हमने खाने का एक जर्रा भर भी आयात नहीं करना है । काफी इसका चर्चा हो चुका है , और भी चर्चा होने वाला है, और सख्ती से होने वाला है । आप इस बात को समझ लें, कि इस वक्त हमारे, हमने कहा था कि हम दो बरस के अंदर बाहर से खाना लाना रोक देंगे । और जो अंदर काफी हम पैदा करेंगे और कुछ कमी भी हुई तो उस कमी को भी बरदाश्त करेंगे । याद रखिए कि वह जो बात हमने कही थी वह हमारा जो प्रोग्राम था, नीति थी, वह कायम है, और उस पर हम चलेंगे, बावजूद दिक्कतों के ।

दूसरी बात यह कि इस वक्त एक अजीब हिन्दुस्तान का खाने के मामले में हाल है । एक तरफ से आप देखें तो इसमें कोई शक नहीं है कि हमारा सिलसिला ज्यादा खाना पैदा करने का जो था उसमें कामयाबी हो रही है । मुल्क में ज्यादा पैदा हो रहा है । और साल भर के बाद कुछ डेढ बरस में और पैदा होगा । तो वह सिलसिला अच्छी तरह से चल रहा है । लेकिन उसी के साथ यह भी हुआ है कि मद्रास में और बिहार में खास खास मौकों पर एक बिलफेल एक मुसीबत आई है, कहीं सैलाब आया, कहीं बारिश नहीं हुई, सौराष्ट्र में भी यह हुआ यह आई, और हम अभी इसे पक्की तौर से समझे नहीं है कि

जहाँ मुसीबत आये उसके लिए हमारे पास खजाने में बहुत जमा हो फौरन हम फेंक दें । इसलिए दिक्कत हुई लेकिन फिर भी इस वक्त बिहार हो, चाहे मद्रास हो, चाहे बंगाल हो, हर जगह इस वक्त काफी खाना पहुंचाया गयाहै । कुछ दिक्कतें उसको दो चार रोज उसको गांव गावं पहुंचाने में हो, लेकिन हर सूबे में हर प्रान्त में काफी है आज के लिए महीने भर के लिए, दो महीने के लिए, तीन महीने के लिए, तो कोई एक परेशानी की खास बात नहीं । हां परेशानी की बातें हैं, दूसरी , एक तो यह कि कोई भी कहीं ऐसी तकलीफ हो, तो हमारी वो एक बदइंतजामी की निशानी है । मैं तसलीम करता हूं कि हमारी कहिए प्रान्त की/हुकूमत की कहिए उसकी बदइंतजामी है और हमें तसलीम करनी है और उससे बचना नहीं है और छुपाना नहीं है । उससे सबक सीखने हैं और दूसरी परेशानी कि बात यह है कि हमारे मुल्क में काफी लोग ऐसे हैं जो अब तक पैसा बनाने की कोशिश करते हैं दूसरे की मुसीबत से । जो चाहे वो व्यापारी हों, चाहे दुकानदारहों या और हों, खुदगर्जी में जमा करते हैं खाने का सामान ताकि ज्यादा दाम मिलें, या कभी साल दो साल उन्हें जरूरत हो, तो उसको काम में ला सकें । सोचें आप, यह किस्म की चीजें हैं जो कि औरों की मुसीबत से फायदा उठाएं और पैसा बनाये । किस तरह की चीज है ? किस तरह से आप और हम इस बात को बरदाश्त कर सकते हैं ? आपजवाब देंगे लम्बी चौड़ी बातें हैं, कि जवाहरलाल ने कहा था दो तीन बरस हुए हों जो यह करता हैं, उसको सख्त सजायें होनी चाहिए । वो बातें तो बहुत होती हैं, उस पर अमल कब होगा ॥ और अगर आप यह सवाल करें तो दुरुस्त हैं आप का कहना कि मैं खुद शरमिन्दा हूं कि हम ऐसे बेबस कैसे हो गए । कि ऐसे लोग हों जो इस तरह से जमा

--10--

करें वाले का नाजायज दाम बढ़ायें , काली बाजार के नाजायज के नहीं और , और चीजों के और हम मजबूर हो जाये कुछ कर न सके । क्या बात है दिल्ली शहर में, भरे बाजार ऐसी बातें होती हैं ? क्या वजह हैं इसकी, क्यों हम बर्दाश्त करें और क्यों आप बरदाश्त करें या कोई इस बात की बरदाश्त करें, इस तरह से हर वक्त हर कोई खतरे के मौके से फायदा उठा कर लोग पैसा बनायें और मालामाल हों । चाहे और लोग मरें, चाहे जिएं । तो फिर कैसे हम उसका सामना करें । जाहिर है पहला फर्ज गवर्नमेंट का है इसका सामना करने का, लेकिन गवर्नमेंट कितने ही लम्बे चौड़े कायदे कानून बनाए उस पर अमल नहीं हो सकता, जब तक आम जनता की उसमें पूरी मदद नहीं है । और वह सहमत नहीं है । और अगर आप और हम यह तय कर लें, कि इस बात को हमें खतम करना है , चाहे वह काला बाजार कहलाए, होर्डिंग कहलाए, जमा करना खाके को जो भी उसका नाम आप लें यह दाम बढ़ाना चीजों का नेमाने । तो उसको हम रोकेंगे, अगर हमने और आपने मिलकर इरादा किया तो यकीनन वह रोकेगा और जो नहीं रोकेगा वह काफी सजा पाएगा ।

आपने, आपने शायद देखा हो या अखबारों में पढ़ा हो कि अभी पिछले दो चार दिन में हमारी पार्लियामेंट में यह सवाल पेश हुआ था और एक तो वहां एक प्रस्ताव पास हुआ तीन दिन हुए और कल रात को करीब सात बजें कल शाम को एक कानून बना है इन्हीं बातों को रोकथाम करने के लिए, आप अखबारों में पढ़े और समझें । और एक चन्द रोज में कानून पे अमल होगा और कायदे बनेंगे तफसील के साथ कि क्या क्या कार्यवाहियां हम करेंगे, किस किस तरह से हम इन चीजों के दाम बढने को रोकेंगे ?

—11—

वह आप के सामने आएगें और उसमें यानी यहां की केन्द्रीय हुकूमत ने कुछ कायदे बनाए हैं, कुछ ताकत ली है कि अगर किसी सूबे में कमजोरी भी हो तो हम वहां कुछ काम कर सकें। और ये ताकि सारे हिन्दुस्तान में एक तरह का काम हो, यह नहीं कि एक तरफ ढील हो, चाहे दूसरी तरफ जोरों से काम हो, लेकिन यह बात तो मैंने आपसे कही, लेकिन इसमें आपकी मदद की जरूरत है। क्योंकि अगर आपकी मदद, आम जनता की राय और आम जनता की मदद न हो तब यह बात चल नहीं सकती। आप को शिकायत होती है और ठीक शिकायत हो कि जो लोग इस काम के करने वाले हैं सरकारी मुलाजिम वगैराह वह ठीक काम नहीं करते हैं, वह खुद कभी गिर जाते हैं, बात ठीक होगी। तो उनको सम्भालना है, अगर ठीक काम नहीं करते तो उनको अलग करना है, और लोगों को रखना है। तो यह खाने के सिलसिले में मैंने आपसे कहा। क्योंकि यह एक अव्वल सवाल है। हमेशा हर मुल्क के लिए, खाने का सवाल अव्वल होता है, खाने का नहीं, बात ठीक होती तो और कैसे ? उसी से बंधी हुई बातें, मैंने आपसे जिक्र किया जरूरी चीजों के दाम बढ़ते हैं, यह भी बेजा बात है। कोरिया में लड़ाई का चर्चा हो, यहां फौरन मौका देखकर फौरन चीजों के दाम बढ़ा दें इसके माने क्या हैं तो इसको भी रोकना है।

और सवाल तो हमारे काफी हैं, सारे हिन्दुस्तान के लिए, देहली शहर के लिए, हमारे शरणार्थियों का सवाल है, हलके हलके कुछ उनको इस सवाल को हल करने की कोशिश हुई। हलके हलके हल हुआ, हलके हलके हल होगा। लेकिन अफसोस यह है काफी लोग बिलफेल परेशानी में पड़े हैं इस बरसात के जमाने में, उसके पहले गरमी में और वक्त गुजरता जाता है और उनकी सारी

—12—

मुश्किलें हलनहीं होती । इसमें भी मैं आपसे कहूंगा कि आप सोचें । यह सवाल पूरी तौर से गवर्नमेंट के काम से हल नहीं हो सकता । आप के हमारे और सारे मुल्क की मदद से और खासकर वो शरणार्थी भाई और बहिन, उनकी मदद से हल हो सकता है । गवर्नमेंट की तरफ देखना कि वह सब बातें कर दें, यह एक नामुमकिन सी बात हो जाती है कि वह कर सकें । शरणार्थियों का सवाल हमने इधर उधर उठाया । यहां कुछ हल किया, उधर बंगाल की तरफ, यह सवाल उठा और काफी भयानक रूपसे उठा । आपने देखा कि चार महीने हुए एक समझौता हुआ था, पाकिस्तान में और हम में, और उस पर बहुत बहस हुई है, उस समझौते परह और बाज लोग, अब तक कहते हैं कि दरअसल,गलती हुई या कामयाबी नहीं हुई यह सब बातें कहते हैं, उसमें । लेकिन यह एक फिजूल सी बहस है हम इस बात का इरादा करें कि हम उस सवाल को भी हल करेंगे, तो यकीनन होगा । और मैं आपको, तफ्सील में तो नहीं जा सकता, इस वक्त लेकिन कुछ ईमानदारी से अपने दिल और दिमाग की बात आपको बताना चाहता हूं और वह यह है कि वो बंगाल का ... भी हालांकि निहायत पेचीदा है , निहायत तकलीफ देह है फिर भी मेरी राय में वह हल होता जाता है । हां, आइंदा का मैं कैसे इकरार करूं, क्या होगा, क्या नहीं ? वह तो हमारे और आपके और और लोगों के तगड़ेपन पर, ताकत पर और कमजोरी पर है । लेकिन मैं इस बात को तसलीम करने को एक मिनट के लिए तैयार नहीं कि कोई बात वहां हो नहीं सकती, इसलिए नाउम्मीद हो जाएं हम, और बजाए इसके कि उसको सम्हालने की कोशिश करें, ऐसे रास्तों पर चलें, जिसमें यकीनन , बंगाल के लिए मुसीबत और

हिन्दुस्तान के लिए तबाही हो।

तो, ये सवाल हमारे सामने हैं, बड़े बड़े। शरणार्थियों के, बंगाल के खाने के और असल सवाल इन सब के पीछे मुल्क का आर्थिक सवाल और बढ़ना। कैसे हम इन्हें हल करेंगे ? हम और आप मिल कर ही कर सकते हैं। न आप अलग कर सकते हैं, न गवर्नमेंट अलग कर सकती है। और जब मैं आपसे कहता हूं गवर्नमेंट को, आप को हक है कि गवर्नमेंट के जो ऐब हैं और कमजोरियां हैं, उनकी तरफ आप तवज्जोह दिलाइए, उनकी आप निन्दा कीजिए और वक्त आने पर आप गवर्नमेंट को निकाल दीजिए और बदलिए। पूरा आप को हक है, मुबारक हो आपको यह करना ? लेकिन यह आप याद रखिए। दो बातों को मिलना नहीं चाहिए धोखा नहीं खाना चाहिए। आपको, कि आप गवर्नमेंट की नीति की निन्दा करने में या एतराज करने में, आप कोई ऐसा काम न करें, जिससे हिन्दुस्तान की जड़ कमजोर हो जाती है, बुनियाद कमजोर होती है, इसका ख्याल आप को रखना है। क्योंकि आमतौर से लोग नहीं रखते हैं इस बात का ख्याल। गवर्नमेंट आती है, और जाती है। हम लोग आते हैं, और जाते हैं। हम लोगों के भी काम करने के जमाने हल्के हल्के खतम होते हैं। थोड़े दिन बाद मैंने आपको याद दिलाया, आप चुनाव करेंगे। लेकिन चुनाव करें या न करें, हम तो हमेशा कुर्सी पर नहीं बैठ रहेंगे हुकूमत की, और जब कोई और साहब तशरीफ लाएंगे बैठने को, बहुत खुशी से, और इतमीनान से उससे इठना होगा। लेकिन जब तक वह जिम्मेदारी हाथ में है, वह लगाम हाथ में है, तो कमजोरी नहीं हम दिखा सकते हैं। जहां तक हमारी अक्ल है, जहां तक

दिमाग है, जहां तक हम में बाजू में ताकत है, हम उसको इस्तेमाल करेंगे, उस रास्ते पर चलने में, चाहे खतरा, बाहर का हो, या अंदर का हो। लेकिन फिर मैं आप से कहता हूं आजाद हिन्दुस्तान है, आजाद हिन्दुस्तान की सालगिरह हम मनाते हैं, लेकिन आजादी के साथ जिम्मेदारी होती है। "जिम्मेदारी हुकूमत की खाली नहीं, जिम्मेदारी हर एक आजाद शख्स की और अगर आप उस जिम्मेदारी को महसूस नहीं करते, अगर आप समझते नहीं, हिन्दुस्तान की जनता, तब, पूरी तौर से आप आजादी के माने नहीं समझे और आप आजादी को पूरी तौर से बचा नहीं सकते है। तब खतरा आए। क्योंकि आखिर में जब आजादी को बचाते हैं, ठीक है। अगर कोई बाहर का हमला हो, और फौजी हमला हो, तो हमारी फौज है, हमारी हवाई जहाज हैं, हमारे समुन्दरी जहाज है, और हमारे बहादुर नौजवान हैं, जो उसमें काम करते हैं, वह उस से बचाऐंगे हिन्दुस्तान को। हमारी शानदार फौज है, बहादुर फौज है। हमारी शानदार और बहादुर हवाई जहाज के और समुन्दरी जहाज के नौजवान हैं और अफसर हैं, ठीक है। लेकिन आखिर में, फौज नहीं बचाती है किसी मुल्क को, न हवाई जहाज बचाते हैं, आखिर में मुल्क की हिम्मत बचाती है। मुल्क का तगड़ापन बचाता हैं। आखिर में मुल्क का एक एक आदमी मर्द और औरत, जब तक अपने को एक, उस हिन्दुस्तान का सिपाही न समझे, तो मुल्क पूरी तौर से महफूज नहीं है। हम, जब हम आजादी के लिए लड़ते थे। इस तीस बरस हुए, उस तीस बरस में तो हमने कोई खास एकसिपाही की वर्दी तो नहीं, पहनी थी। लेकिन हम अपने को हिन्दुस्तान की आजादी के सिपाही समझते थे, और निडर हो के, बड़ी ताकत का मुकाबला करते थे। एक साम्राज्य का,

एक एम्पायर का, मुकाबला हम करते थे, बड़ी ताकत का, और लोग हैरान होते थे, और कभी हम पर हंसते थे और कभी, कभी ताज्जुब उन्हें होता था, कि बात क्या है ? ये कुछ लोग, कमजोर आदमी, न इनके पास हथियार न कुछ, और बैठे हैं मुकाबला करने, एक बड़ी हुकूमत का, बड़े साम्राज्य का । लेकिनअजीब बात यह थी कि उस वक्त भी हमारे दिल में कोई डर नहीं था, क्योंकि हमने कुछ थोड़ा बहुत उस अपने बड़े बुजुर्ग और लीडर का सबक सीखा था, कि डरने से काम नहीं चलता, और हमने मुकाबला किया अपनी हिम्मत से और अपने को भी एक सिपाही हिन्दुस्तान की आजादी का समझ के । तो फिर जरा उस हवा को फिर लाईये उस रंग को फिर लाईये । तो फिर अगर हम ले आएं, तो हमें न अंदर कि किसी बात से डर है, न बाहर की किसी बात से डर है ।

तो आज के दिन, इस हिन्दुस्तान की आजादी के वर्षगांठ के दिन, इन बातों को हमें याद करना है, कि जो बुनियादी बातें देश की हैं, उनको याद रखना, और छोटी बातों में वह नहीं जाना । "बुनियादी बात मुल्क का इत्तिहाद है । बुनियाद बात यह है कि हिन्दुस्तान अगर मजबूत देश होगा, तगड़ा देश होगा, अगर इसमें तरक्की होगी तो एक ही तरह से, कि यहां जितनी कौमें हैं, जितने मजहब के लोग हैं, सबों को पूरा अधिकार हो, पूरा अख्तियार हो सबों के लिए, सब दरवाजे खुले हों तरक्की के/सब पूरे हिस्सेदार हों, इस आजादी में, और अगर एक दूसरे से लड़ेंगे तो एक दूसरे को कमजोर करेंगे, यकीन मानिए, आप कमजोर करेंगे और नाहक आजादी को कमजोर करेंगे, इस तरह से हम चलें, और सब मिल के जो सवाल है, चाहे जो मैंने आपसे खाने का कहा, या कोई और, उनका मुकाबला करें,

और उसको हल करें, और हर सूरत से अपने दिल में घबराहट और डर नहीं आने दें । डरा हुआ आदमी, और घबराया हुआ आदमी निकम्मा और बेकार आदमी होता है । अगर मुसीबत ज्यादा होती है, तो हिम्मत ज्यादा होनी चाहिए उसका मुकाबला करने के लिए, न कि यह कि उस वक्त कमजोर हो के और हाय हाय करके हम घबरा जाये ।

तोफिर , मैं आपको इस तीसरी सालगिरह की मुबारक देता हूं, और उम्मीद करता हूं कि यह जो अगला साल आता है, इसमें हम हिम्मत मे, निडर हो के, जो जो मुसीबतें आयेंगी, उनका सामना करेंगे और मुसीबत से घबरायेंगे नहीं, उसका स्वागत करेंगे, और सामना करेंगे और उसको कुचलेंगे ।

जयहिन्द ।

---